दुर्गा कॉमिक्स

शैतान आत्मा

मुफ़्त
इस सुपर
हॉरर विशेषांक के
साथ शैतान आत्मा
का मैग्नेट स्टिकर

हॉरर सीरीज

SCAN & EDITING BY RAHUL DUBEY

कलादीप

प्रकाशक : दुर्गा पॉकेट बुक्स, ईश्वर पुरी-गली जैन मंदिर, मेरठ—250002

सम्पादक : दीपक जैन © सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

© सर्वाधिकार सुरक्षित : दुर्गा पॉकेट बुक्स, मेरठ—250 002 फोन नं० : 21077

शैतान आत्मा

कथानक व चित्रांकन
वैशाली आर्ट
सम्पादक–दीपक जैन
प्रकाशन– दुर्गा पाकेट बुक्स
ईश्वर पुरी, मेरठ–2

नीरज नारंग आत्माओं पर विश्वास नहीं करता था। लेकिन जब वह इस हादसे से गुजरा तो... बड़ी मुश्किल से उबर पाया। उसने इस बात को हमेशा के लिये अपने दिल में रख लिया।

मुझे अपने शरीर में वापिस जाना है। हे भगवान! मुझे शक्ति दे... ये बुरी आत्मायें मुझे नहीं रोक सकती।

बहुत देर हो गई नीरज ये बूढ़ा थक गया है। उसका सम्पर्क टूट रहा है... और अब तुम हमेशा के लिये हमारे साथ रहोगे!

रात का समय था... राजधानी दिल्ली का भव्यतम इलाका ग्रेटर कैलाश, जहां रईस लोग रहते हैं, एक विशाल कोठी के आगे कुछ लोगों की भीड़ लगी है। क्योंकि इस कोठी में रहता है आत्माओं से साक्षात्कार कराने वाला व्यक्ति।

मेरे खयाल से ये सब बकवास है!

ओह, चलो भी नीरज! खूब मजा आयेगा!

ये सब आत्मा-वात्मा का चक्कर छोड़ो रीटा! इससे अच्छा तो पिक्चर चलते हैं.. वहां ज्यादा मजा आयेगा!

नीरज नारंग साहब, आज की रात, आपने मेरे ऊपर छोड़ा था कि मैं जैसे चाहूंगी वैसे बितायेंगे!

© DURGA POCKET BOOKS

अगर मुझे पता होता कि तुम मुझे ऐसी बकवास जगह लेकर आओगी तो मैं कभी भी न आता!

श...श...झगड़ो मत! वह इधर ही आ रहा है!

कमरे की रोशनी गायब हो गयी। सभी लोग शांत बैठ गये, सुई भी गिरे तो आवाज हो जाये, ऐसी शांति और लंबा चौगा पहने एक व्यक्ति प्रकट हुआ.

स्वागत है मित्रों! मेरा नाम जादूगर अनंतनाग है, आप लोग सत्य की खोज में आये हैं!

ओह! क्या एक्टिंग है, वाह!

अनंत ... मैं तुम्हारे पिछली बार के प्रयोग से बड़ी खुश हूं! क्या तुम एक बार फिर मेरी बिछड़ी बहन की आत्मा को बुला सकते हो?

मैं इस बात की पक्की गारन्टी तो नहीं लेता मिसेज लालवानी! आत्मायें खुद आती हैं, बस उन्हें तो मेरे होठों द्वारा बोलने का मौका चाहिए।

कृपया आप सब लोग शांति से कुर्सियों पर बैठ जायें और अपने हाथों की उंगलियों को खोल लें! आप सबके हाथों पर किसी की उंगली का स्पर्श होगा, ठीक! शुरू करें?

मैं अपने शब्द वापिस लेता हूं प्रिय! ये फिल्म से ज्यादा मजेदार है!

नौजवान! कई लोगों के शरीरों पर आत्मायें आसानी से कब्जा कर लेती हैं, मैं भी उनमें से हूं... अगर तुम्हें कुछ न हो तो कृपया शांत रह कर सहयोग करने की चेष्टा करें!

सॉरी!

अनंत ने फिर से अपना प्रयोग शुरू किया। उसकी आंखें सुर्ख होकर जम गईं। अचानक ही उसकी आंखें धीरे-धीरे मुंदने लगीं। वह बड़बड़ा उठा—

चले आओ... समय की दीवार को लांघ जाओ

नीरज सारंग बड़े ध्यान से उसके किया कलापों को देख रहा था। जैसे ही अनंत ने बोलना बंद किया उसे अजीब सा अनुभव होने लगा।

मुझे क्या हो रहा है? मैं हिल ही नहीं सकता- मेरा शरीर हल्का होता जा रहा है!

शैतान आत्मा

और फिर देखते-देखते नीरज नारंग की आत्मा उसके शरीर से निकल कर हवा में आ गयी। नीरज हैरान था।

अरे! ये क्या...? मैं तो सामने कुर्सी पर बैठा हूं...क्या मैं सपना देख रहा हूं?

नही! सब कुछ साफ है...हे भगवान! और मैं उस पर विश्वास नही कर रहा था! मैं भी आत्मा बन गया हूं...जिसके बारे में वह बात कर रहा था! मै हवा में उड़ रहा हूं।

नीरज की आत्मा इस पृथ्वी से होती हुई ब्रह्माण्ड में निकल गई। तभी उसे ऐसा लगा जैसे पाच अनोखे जीव उसके पीछे लग गए हैं। जो उसे धकेल रहे हैं।

पृथ्वी से बाहर निकल आया मैं...मैं सभी लोगों और शहरों को देख रहा हूं...ये...तो

और फिर अचानक ही उस सम्पर्ककर्त्ता के मकान में उन पांच बुरी आत्माओं ने नीरज नारंग की बॉडी को घेर लिया... और...

बरबादी...मौत आतंक...तुम्हारा स्वागत है, नीरज!

मैं पागल हो जाऊंगा...ये सच नही है, सिर्फ सपना है!

Scan & editing by Rahul Dubey

तुम कोई सपना नहीं देख रहे हो- बल्कि अब तुम हमारी दुनिया में प्रवेश कर चुके हो! हम मरे हुए लोगों की आत्माएं हैं...तुमने अपना यह सांसारिक चोला छोड़ दिया है, अब यह मेरा है।

नही! दूर हटो! तुम मेरे शरीर मे नहीं रह सकते।

तुम भला मुझे कैसे रोक सकते हो? अब तुम मर चुके हो एक बार तुम अपने शरीर से निकल चुके तो हमेशा हमारे साथ रहना गुड बाई हो-हो!

न...नही! रुको अनंत जाग रहा है!

ओह! आज मुझे बड़ा अजीब सा महसूस हो रहा है! मै फेल हो गया मैं आज रात आत्मायें नहीं बुला सका- मैं तुम्हारे चेहरे देख कर बता सकता हूं, कुछ नही हुआ!

ल...लेकिन! हुआ है...मैं...फंस गया हूं- मुझे बचाओ अनंत बचाओ!

नीरज नारंग का चिल्लाना बेकार ही गया। अनंत ने उसे नहीं सुना... न ही कोई जीवित व्यक्ति अब उसे सुन सकता था... उसने देखा कि उसके शरीर में रहने वाला शैतान रीटा को बाहर ला रहा है।

वह वाकई में नकली है! तुम सच कह रहे थे प्रिय!

म...मैंने तो पहले ही कहा था

नहीं! नहीं! जाओ मत, वापिस आओ!

अब हम लोग क्या करें, प्रिय? हुम्म... चलो इस पार्क का एक चक्कर ही लगा आएं!

नहीं! म... मेरी इच्छा नहीं है! मुझे जाने दो... अभी मुझे ढेर सारे काम देखने हैं, हां बहुत सारे काम!

नीरज को न जाने क्या हुआ? बड़ा अजीब सा व्यवहार कर रहा है। ओह... लगता है मुझसे नाराज है, सुबह उससे माफी मांग लूंगी।

रीटा... डार्लिंग! म... मैं हूं नीरज, यहां तुम्हारे साथ! तुम किसी और को रोक रही हो, सुनो तो!

कोई फायदा नहीं! वह मुझे नहीं सुन पा रही... मेरा क्या होगा- ऐ सुनो! ये सब तुम्हारा किया धरा है, मेरा शरीर मुझे वापिस करो!

मेरे रास्ते से हट जा बेवकूफ! मैं तुझ पर रहम करने वाला नहीं- अब अपनी बदकिस्मती पर बैठ कर आंसू बहा!

ओह! मैं बरबाद हो गया... मैं खत्म हो गया!

हा! हा! हा! रोओ और जोर से रोओ! हा-हा-हा!

अब नीरज नारंग के लिए अनोखे अनुभव शुरू हो गए थे... अब उसने अपने आपको एक दूसरी दुनिया में पाया... भयानक क्रूर डरावने चेहरे उसका मजाक उड़ाने लगे।

हा... हा... ही... ही... तुम मर चुके हो... मर चुके हो मर!

रूको! रूक जाओ! मैं और बर्दाश्त नहीं कर सकता!

शैतान आत्मा

हम बुरी आत्मायें हैं! हम खूनी हैं... हम लोगों ने आत्म हत्या की है... हम लोगों ने बुरे कर्म किये हैं... हम लोग यहां अपने पाप कर्मों के कारण है जब हम अपने किये की सजा पा लेंगे तो छुटकारा पा जायेंगे, लेकिन...

तुम यहीं रहोगे! हा-हा- हमेशा के लिए फंस गये! हा-हा-हा!

ये लोग सच कह रहे हैं, मैं बरबाद हो गया... मैं इस जीवन मृत्यु के संसार में हमेशा के लिए फंस गया, उस बुरी आत्मा ने मेरे शरीर पर कब्जा कर लिया मुझे किसी तरह इस जंगल से निकलना होगा

नीरज के दिमाग में एक योजना ने जन्म लिया... अगर सफल हुई तो ठीक... वरना हमेशा के लिए...

बचपन में जब मैं सोया होता था तो परियां मेरे सपने में आती थी, क्यों न मैं रीटा के सपने में आने की कोशिश करूं!

और फिर एक रात बाद दूसरी रात, नीरज की आत्मा सोयी हुई रीटा के सपने में आने की कोशिश करती रही—

प्रिय, सुनो! अनंत को वह सब जाकर बताओ जो मैं तुम्हें बताऊं... उसके घर जाओ!

ऊं ऊं ऊं

मैं उसके सपने में ठीक तरह से नहीं आ पा रहा... वह काफी गहरी नींद में सोयी है! लगता है वह सपने नहीं देखती... नहीं, शायद मैं ऐसा सोच रहा हूं... मुझे अपनी कोशिश जारी रखनी चाहिये

अगली सुबह जब रीटा अपनी ड्रैसिंग टेबिल पर अपने बाल काढने बैठी तो उसके चेहरे पर चिन्ता की रेखायें थी।

कितना अनोखा सपना देखा था मैंने! नीरज मुझे किसी चीज की चेतावनी दे रहा था! मुझे याद नहीं वह क्या था। शायद मैं पागल हूं... लेकिन मुझे देखना चाहिए कि क्या ठीक है।

भगवान के लिये रीटा! तुम मेरे घर मत जाना!

लेकिन कुछ ही देर में—

हूं... वह घर पर ही है! मैं उससे पूरे हफ्ते नहीं मिल पायी। कितना व्यस्त आदमी है, मैं उसे आश्चर्य में डाल दूंगी।

नहीं रीटा नहीं! ओह! वह मुझे सुन ही नहीं रही!

लेकिन लड़की से रुका नहीं गया। वह घबड़ाती हुई अंदर घुसी... वह सोच रही थी मेरा प्रेमी आश्चर्य में पड़ जायेगा।

तुम!! तुम यहां क्या कर रही हो? मेरी जासूसी? जवाब दो!

नीरज... म... मैं... प्लीज मुझे नहीं पता था कि तुम काम कर रहे हो?

भागो... यहां से... और दोबारा वापिस मत आना!

म... मुझे माफ करना अगर मैंने तुम्हें परेशान किया हो... गुड बॉय!

और बेचारी खूबसूरत रीटा, हैरान परेशान सी घर से निकल गयी, और फिर वह शैतान आत्मा जो नीरज नारंग के शरीर में घुसी बैठी थी, नीरज की आत्मा पर बरस पड़ी, जो यह सब देख रही थी।

मैं तुम्हें चेतावनी देता हूं, मूरख! अगर उसने मेरे काम में टांग अड़ायी तो मार डालूंगा उसे!

काम? तुम कैसे काम की बात कर रहे हो?

ये मशीन देख रहे हो? ये मरी हुई आत्माओं को नर्क से वापिस पृथ्वी पर लायेगी... और तुम कुछ नहीं कर सकोगे... नहीं रोक सकते मुझे!

मुझे अनंत को सावधान कर देना चाहिये "न" लेकिन कैसे?

अब नीरज की घबरायी हुई आत्मा रीटा के पीछे-पीछे उड़ चली... जो गुस्से से सड़क पर जा रही थी।

जो आदमी मुझसे बात कर रहा था, वह देखने में तो नीरज था- ल" लेकिन शायद वह नहीं था, मैंने जो सपना देखा था, मुझे "अनंत के पास जाना चाहिये।

हां, जल्दी! रीटा जल्दी!

शीघ्र संपर्क कर्त्ता के मकान पर—

हां! ऐसा लगता है, जैसे शब्द मेरे दिमाग में गूंज रहे हों... शायद मेरा वहम हो! लेकिन आज मुझे पक्का यकीन हो गया।

... और तुमने देखा कि नीरज की आत्मा वह संदेश बार-बार दोहरा रही है!

अनंत समझ गया कि कुछ बहुत ज्यादा गलत हुआ है। वह कुछ ही क्षणों में समाधि में लीन हो गया। शीघ्र ही सम्पर्क हुआ... लेकिन नया खतरा पैदा हो गया।

अरे बुरी आत्मायें, ये कहां से आ गयी! उन्होंने सम्पर्क कर्त्ता के इर्द-गिर्द घेरा बना लिया है।

दूर हटो! कोई फायदा नहीं!

सभी आत्मायें उसे धकेलने लगी। अनंत से दूर ले जाने लगी उसने उनका मुकाबला किया।

मेरे रास्ते से हट जाओ बुरी आत्माओं! मैं अब भी तुमसे ज्यादा ताकतवर हूं! सुना मुझे?

ओह! मैं कहां हूं?

वह जान गया... हो हो! हम फिर जीत गये देवा?

मुझे बताओ क्या वाकई मेरा शक सही था?

हां... मैंने उसे सुना! वह नर्क की दुनिया में कैद है, और बहुत बड़े खतरे में है" हमें उसे किसी भी तरह से निकालना है, जो कोई भी नीरज के शरीर में घुसा बैठा है।

सुना तुमने? अब भी मेरे लिये बचने का एक मौका है।

चलो भाइयो... चलो! हम अपने मित्र को चल कर बतायें और उसे कहें कि वह जल्दी से उस मशीन को बना लें जो हमें पृथ्वी पर ला सके।

और फिर, आधे घण्टे बाद, जब अनंत और रीटा नीरज के घर जाने के लिए निकले तो बाहर वह जीव उनका इंतजार कर रहा था।

बहुत बुरा हुआ कि तुम्हें पता चल गया, तुम दोनों को मरना होगा!

वापिस जाओ, उसके हाथ में पिस्तौल है!

हा... हा" मार डालो उन्हें! मार डालो!

रीटा, इस गमले का प्रयोग करो!

मेरे दिमाग में एक आवाज गूंज रही है... ये... ये तुम हो नीरज-गमला, हां" हां" इसका प्रयोग करती हूं!

शाबाश! उसका रिवाल्वर छीन लो... जल्दी... मैं इसे पकड़ने की कोशिश करता हूँ!

आहsss

ठीक है!

इससे क्या फर्क पड़ता है- कि तुम कैसे मरोगे... मैं तेरा गला दबा दूंगा- मरो... मरो!

वह काफी शक्तिशाली है... आह... गड़ब... बचाओ!

रीटा! कुछ करो... यहां खड़ी मत रहो!

रीटा अपने ख्यालों से एकदम बाहर आई और उसने उसके पीछे जोरदार प्रहार किया।

ठीक है! अब इसका शरीर मेज़ पर लिटाने में मेरी मदद करो!

तड़ाक!

अनंत नाग ने तेजी से अपना काम शुरू कर दिया और नीरज नारंग की आत्मा को बुलाने लगा-

नीरज नारंग! दूसरी दुनिया की दीवार तोड़ डालो! अपने शरीर में आ जाओ!

उठो दोस्त उठो! लड़ाई जारी रखो!

Scan & editing by Rahul Dubey

अब तो नीरज की आत्मा का युद्ध शुरू हो चुका था। वह वापिस जाने के लिए मुड़ा तो बुरी आत्माओं ने उसे घेर लिया।

मैं अपना साहस खोता जा रहा हूं, वे लोग आ रहे हैं।

मार डालो भाइयों! उसे, हमेशा के लिए तहखाने में डाल दो! आईईsss

आखिरकार मैं आ ही गया! जल्दी से बाहर आ जा बेटा!

मेरी मदद करो भाइयों वह मुझे इस शरीर में से निकाल रहा है... आईई!

तभी बूढ़ा सम्पर्ककर्त्ता अपना दिमागी ध्यान खोबैठा और उसका ध्यान टूट गया। नीरज की आत्मा कमजोरी महसूस करने लगी।
ओह!
अनंत... हे भगवान! नही... गिरो मत!
हा! हा! वह बेहोश हो रहा है... और तुम हमेशा के लिए!
लेकिन उस शैतानी आत्मा के शब्द उसके मुंह में ही रह गये। नीरज ने अपनी पूरी शक्ति और ताकत लगा दी।
निकलो मेरे शरीर से बाहर!
आईईई
वह जाग रहा है... अनंत जी क्या वह बदल गया?
हां, मेरे खयाल से उसने बुरी आत्मा से डट कर मुकाबला किया... शुक्र है वह बच गया... वापिस आ गया।
अनंत... यही है वह मशीन इसे तोड़ने में मेरी मदद करो जल्दी!
ओह! कैसी मशीन है ये?
जब मैं एक बार नीरज से मिलने आई थी, तो वह इस मशीन पर काम कर रहा था और मुझ पर बहुत गुस्सा हुआ था।
हो गया- बच गयी दुनिया!
भड़ाम!
तड़ाक!
भड़ाक
हो गया! अब वह दुष्ट आत्मायें दोबारा यहां नहीं आ सकेंगी... मैं एक भयानक हादसे से निकला हूं। एक खतरनाक जगह से वापिस आया हूं... चलो, यहां से जल्दी!
हां, हां क्यों नही प्रिय!
हम इस बात का किसी को भी पता नहीं लगने देंगे क्योंकि कोई भी विश्वास नहीं करेगा
और इस तरह नीरज नारंग उस मकान से अनोखे अनुभव लेकर लौटा। लेकिन शायद उसने इस धरती को बुरी आत्माओं के प्रकोप से बचा लिया, जो पृथ्वी पर वापिस आने का रास्ता बनाना चाहती थी। अब खतरा हमेशा के लिए टल गया।
समाप्त

अनोखा डर

जयेश निरूला जानता था कि इस दुनिया को बरबादी से बचाने का सामान उसके ब्रीफकेस में था, जिसे वह ले जा रहा था। किसी भी तरह से उसे उस ब्रीफकेस को शैतानों के हाथों से बचाते हुए सुरक्षित स्थान पर पहुंचाना था। क्या ये शैतान वाकई में थे, जो उसका हर जगह पीछा कर रहे थे, या ये उसके दिमाग का वहम था?

कई महीनों से वे लोग इस पर काम कर रहे थे मिनिस्ट्री ऑफ वर्ल्ड ऐसे तथ्य ऐसे प्रमाण जुटाने में लगी थी, ऐसे डाक्यूमेंन्ट्स इकट्ठे किए गए थे जो पृथ्वी की सुरक्षा के लिए बेहद जरूरी थे।
और फिर वे डाक्यूमेन्ट्स जयेश निरूला को, जो राजदूत था दिये गए।
वाहन खड़ा न करें
बस स्टॉप
लेकिन जयेश निरूला को क्या पता था कि नियति क्या खेल खेलने वाली है... जब वह सड़क पार कर रहा था-
देख कर!
वह कार! तुम उसके नीचे आ जाओगे... ओऽऽ ह!
भड़ाम
जयेश निरूला के कानों में आवाजें सी गूंजी और उसका सर कार के बम्पर से बड़ी जोर से टकराया।
कड़ाक
आप ठीक तो हैं न महाशय! उस कम्बख्त कार वाले ने तो मारने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।
म... मेरा ब्रीफकेस कहां है?
क्या यही आपका ब्रीफकेस है?
ह... हां! इसे मुझे दो!

इस व्यक्ति ने आपकी जान बचायी है! लेकिन अपनी जान से हाथ धो बैठा!

मेरा सिर! म... मैं कुछ भी साफ-साफ नहीं देख पा रहा, जबकि मुझे कुछ याद आ रहा है।

शायद ब्रीफकेस के बारे में है वह!

ओह! इस हादसे से शायद आपके दिमाग पर असर पड़ा है, आप कुछ देर रुकें!

क्योंकि अभी एम्बुलेन्स आती होगी! वे तुम्हें हास्पीटल ले जायेंगे वहां आप अपना जांच करा लें!

न...नहीं धन्यवाद म...मैं ठीक हूं!

अपना दुखता सिर लेकर जयेश निरूला अपने फ्लैट पर पहुंचा और फिर वह अपने पुराने विचारों को पकड़ने की अधूरी कोशिश करने लगा!

बस मुझे इतना ध्यान है कि इस ब्रीफकेस में ऐसा कुछ है जो मुझे कहीं पहुंचाना है!

मौत से उस भीषण मुकाबले के बाद मुझे कुछ याद नहीं! लेकिन अगर मैं इस ब्रीफकेस को खोल कर चैक करूं तो मेरी बात का उत्तर मिल जाये!

हे भगवान! ये डाक्यूमेन्टस तो इस विश्व की सुरक्षा का मास्टर प्लान है! अगर ये किसी गलत हाथ में पड़ गये तो कयामत आ जायेगी!

समय समाप्त हो गया जयेश उन्हें हमें दे दो.

य... ये क्या है?

Scan & editing by Rahul Dubey

मेरा सोचना ठीक था... वह शैतान नहीं आया!

समय पूरा हो गया! जयेश निकला तुमने सुना नहीं!

ये कौन कह रहा है?

चुप रहो!

जयेश निकला ने अपना ध्यान थियेटर के परदे पर लगाया। लेकिन ये क्या? परदे पर भी वही भयानक चेहरा शैतान का! डर के मारे वह अपनी सीट से उछलकर खड़ा हो गया!

हमें ब्रीफकेस चाहिए... अभी...! समझे!

क्यों भाई क्या बात है?

शायद पागल है!

वे उसे नहीं देख पा रहे! वे उसका चेहरा परदे पर नहीं देख रहे.

थियेटर से बाहर आकर जयेश निकला उस राक्षस का इंतजार करने लगा।

वे अब मेरा पीछा नहीं कर रहे लगता है चले गये। ये भयानक जीव सिर्फ मुझे ही क्यों दिख रहे हैं। मेरे ही दिमाग में क्यों खलबली मच रही है.

शायद ये सब मेरा दिमागी खौफ है! मुझे डाक्टर के पास चलना चाहिए! इससे पहले कि मैं अपने ऊपर से कंट्रोल खो दूं!

बाद में मनोचिकित्सक के पास...

कहीं मेरा दिमाग तो नहीं फिर गया डाक्टर?

नहीं! ऐसी बात नहीं! पहले मैं आपकी पूरी कहानी शांति पूर्वक सुनना चाहूंगा मि० निरूला!

परिस्थितियों के मुताबिक आपको शैतानों के बारे में वहम समझ आता है! यह सब उसी एक्सीडेन्ट का नतीजा है, जो शाम के समय आपके साथ हुआ।

और इसके साथ ही इस ब्रीफकेस के प्रति भी आपकी भारी जिम्मेदारी है। इस भारी जिम्मेदारी की वजह से आपका भय आपके दिमाग में घुस गया है।

मेरी सलाह है कि आप इस ब्रीफकेस को किसी जिम्मेदार व्यक्ति के हाथों सौंप कर अपना दिमागी बोझ हटा लें, तब मेरे पास आयें!

धन्यवाद डॉक्टर निगम! मैंने आपको इतनी रात गये तकलीफ दी।

जब जयेश निरूला मनोचिकित्सक के ऑफिस से बाहर आया वह काफी बदलाव महसूस कर रहा था, डर का भार उसके सिर से उतरा हुआ लग रहा था और वह उस शैतानी चेहरे को याद करके अब हंस रहा था। जो उसे बार-बार नजर आ रहा था।

डा० निगम ठीक कह रहे थे जैसे ही मैं इस ब्रीफकेस से छुटकारा पा लूंगा, सब कुछ अपने आप ही ठीक हो जायेगा।

मैं भी कितना बेवकूफ था जो यह सोच रहा था कि शैतान मुझे परेशान कर रहे हैं... कॉफी का एक कप मेरी थकावट दूर कर देगा।

ताजा समाचार! अभी कुछ देर पहले मशहूर मनोचिकित्सक डा० निगम का उसके फ्लैट पर खून हो गया है।

डा० निगम को अभी कुछ देर पहले कत्ल कर दिया गया! पुलिस अभी तक हत्या का कारण नहीं जान पायी है।

डा० निगम का खून हो गया?!

इसका मतलब वह कुछ देर बाद ही कत्ल कर दिये गये जैसे ही मैंने उनका आफिस छोड़ा। जरूर उन शैतानों ने ही उनका खून किया होगा... क्योंकि मैंने उनके बारे में उन्हें बताया था।

समय खत्म हो गया जयेश!

ओह! क्या कहा तुमने?

भयानक सपने की फिर से शुरुआत हो चुकी थी। जयेश निकला भाग पड़ा... उसका गला खुश्क हो गया।

ब्रीफ़केस! इसे हमें सौंप दो जयेश!

वे इसे कभी भी नहीं पा सकेंगे! कभी नहीं!

अब मैं क्या करूं?

अब मुझे पक्का यकीन हो गया है वे इसके पीछे हैं। डा० निगम मेरे दिमागी शैतान के हाथों ही मारे गए।

जरूर कुछ कारण है। उन शैतानों को मेरा ब्रीफकेस चाहिए... वे जानते हैं इसमें क्या है।

टैक्सी... साहब!

टैक्सी

हां! मुझे विश्व शांति की शारदा पर ले चलो जल्दी!

मैं विश्व शांति के किसी बड़े अफसर को ब्रीफकेस दे दूंगा... और उसे खतरे के बारे में भी आगाह कर दूंगा भले ही वह मुझे पागल समझे

अगर वे शैतान विश्व शांति को खतरा पहुंचाने के लिए यह कागजात छीनना चाहते हैं और विश्व को खतरा है तो अपनी जान दे कर भी इन्हें बचाऊंगा.

क्या बात है ड्राइवर? तेज चलो!

मैं कह रहा हूं तेज चलो! मैं जल्दी से वहां पहुंचना चाहता हूं... नहीं! नहीं! दोबारा नहीं!

टैक्सी की स्पीड तेज होती चली गयी... जयेश निकला समझ गया कि वह दूसरी तरफ जीवित नहीं पहुंच पायेगा... अब तो बस एक ही तरीका रह गया था।

मुझे छलांग लगानी चाहिए

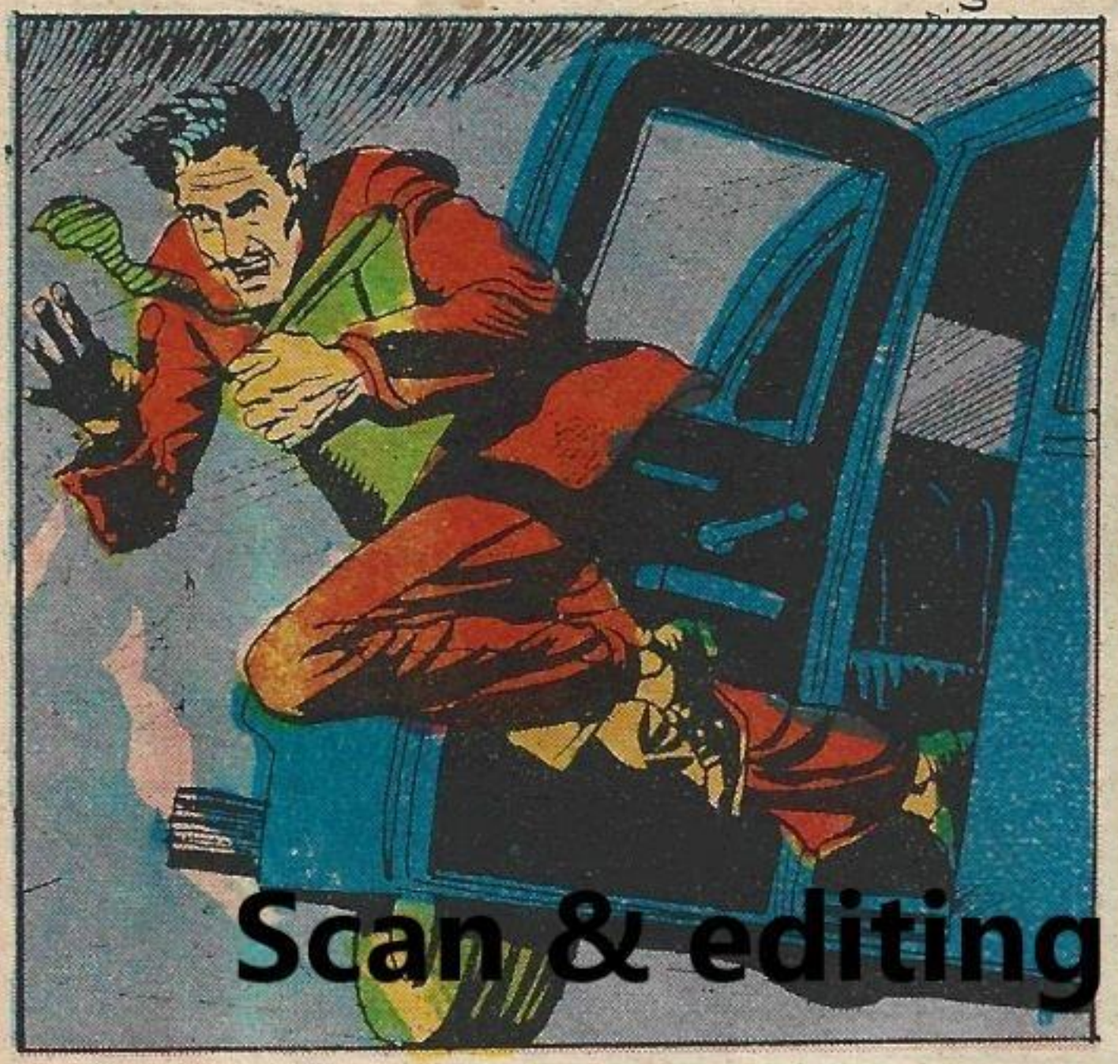

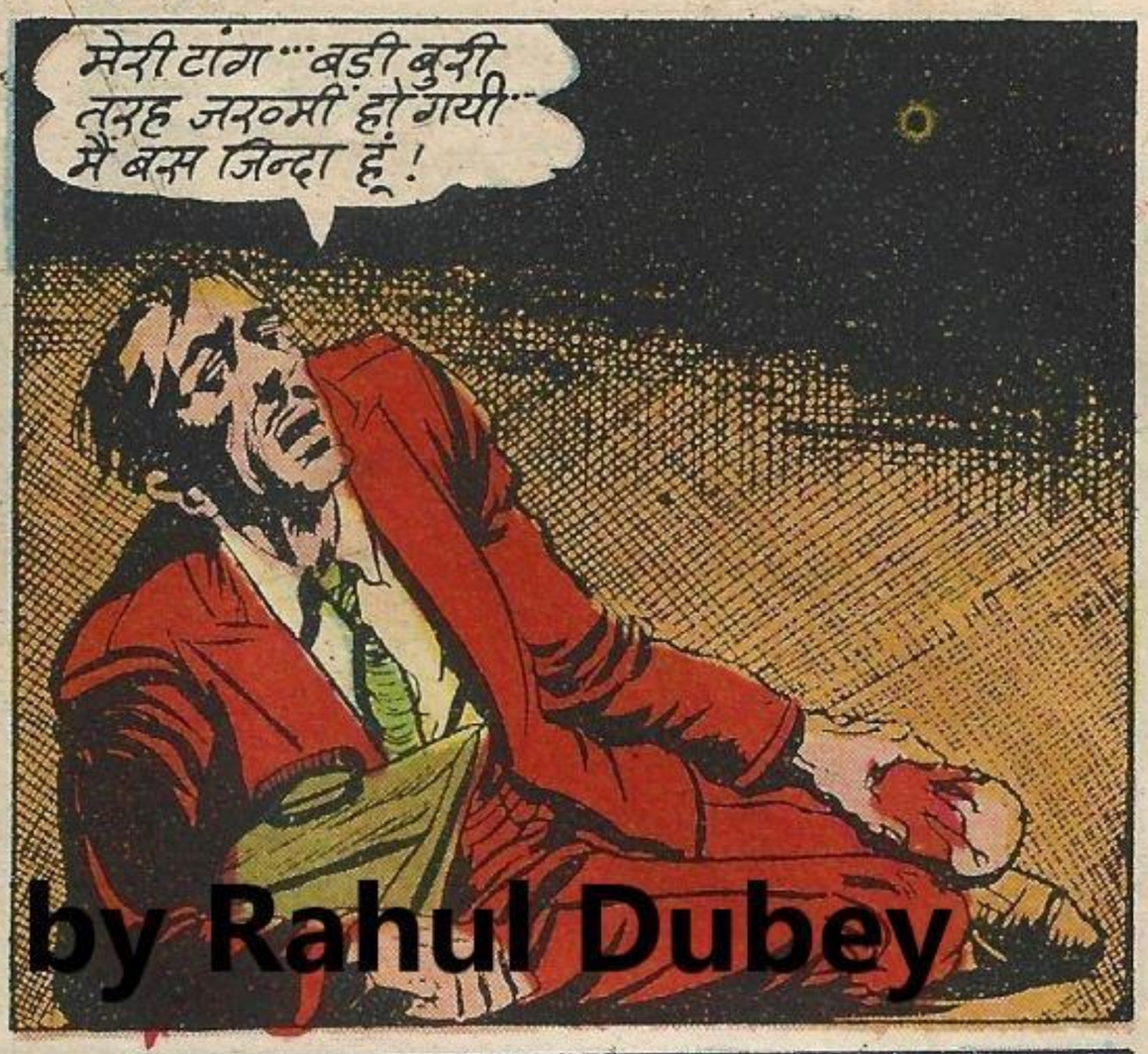

मेरी टांग ... बड़ी बुरी तरह जख्मी हो गयी ... मैं बस जिन्दा हूं !
Scan & editing by Rahul Dubey
ओह ! पुलिस वाला ! शुक्र है ... मैं बच गया।
जयेश निकला जैसे ही उसके पास पहुंचा, एक भय की लहर उसके शरीर में दौड़ गयी ... वही शैतानी चेहरा पुलिस वाले के रूप में उसके सामने था।
य ... ये भी ... उन्हीं में से एक है।
वह मुझ पर झपट रहा है ... ल ... लेकिन मैं उसके हाथ नहीं आने वाला !
वह अपनी लंगड़ाती टांग का दर्द भी भूल गया ... और उनसे बचने के लिए ऐसे भागा जैसे भेड़िये से बचने के लिए भेड़ भागती है
दूसरी तरफ से और भी आ रहे हैं ... मैं फंस गया - बचने का कोई रास्ता नहीं क्या करूं ?
बस ... एक ही रास्ता है।
और इसी निर्णय के साथ जयेश निकला ब्रिज से नीचे कूद गया ... उसने अपनी जान संसार की भलाई के लिए कुर्बान कर दी। उसने मौत को चुन लिया।
समाप्त

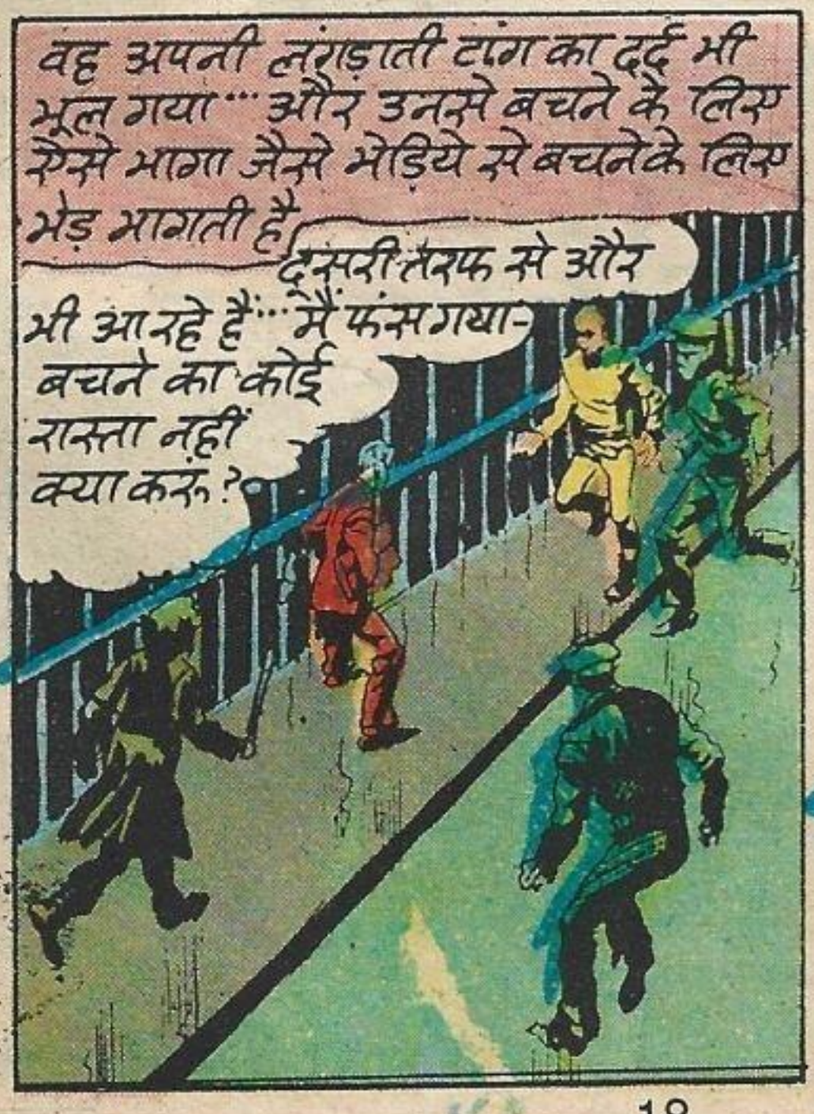

हाथी का बदला

राजा किसी का भी खून कर सकता है। चाहे वह जानवर हो चाहे इंसान, उसे किसी का भय नहीं! क्योंकि वह कानून है। लेकिन जब राजा ने एक हाथी को मार डाला तो...

कहावत है कि हाथी और उसके महावत में बड़ा गहरा रिश्ता होता है। ऐसे ही एक महावत था श्याम-सिंह और उसका हाथी रामू।

रामू और श्यामसिंह बचपन से साथ-साथ खेले, बढ़े थे... दोनों में बड़ा प्यार था।

पहाड़ी जंगलों में श्यामसिंह अपने हाथी रामू के साथ काम करने जाता।

सभी महावतों को अपने हाथियों से प्यार था, लेकिन जितनी ताकत श्यामसिंह के हाथी रामू में थी शायद ही किसी दूसरे हाथी में हो... अकेला वह ट्रेन तक को उठा सकता था

रामू का जवाब नहीं! उसमें बला की ताकत है!

उसमें दस हाथियों जितनी ताकत है!

राजा दुर्जनसिंह उसकी शक्ति देख अचंभित थे।

वाह! कमाल का हाथी है! मैं इसे अपनी सेना में शामिल करूंगा!

हुर्रा ऽऽ! वाह! क्या जबरदस्त काम किया!

तुम्हारे हाथी पर भगवान की कृपा है!

ऐं सुनो... महावत! राजा तुमसे बात करना चाहते हैं!

न... राजा जी? मैं और मेरा हाथी सम्मानित हुए!

अगर तुम मेरे यहां नौकरी कर लो तो ज्यादा सम्मानित होगे!

मैं तुम्हें और तुम्हारे हाथी को ऐसी ट्रेनिंग दिलवाऊंगा कि युद्ध में तुम दोनों कमाल करोगे!

ल... लेकिन महाराज मुझे युद्ध में कोई दिलचस्पी नहीं, इसलिए मुझे माफ करें!

देखो मना मत करो! मैं तुम्हें बड़ी अच्छी तनख्वाह...

...दूंगा और रहने को मकान भी!

निमंत्रण के लिए शुक्रिया राजा जी! लेकिन मैं पैसे के लिए किसी की गुलामी नहीं करूंगा!

इन दोनों को कैद कर लिया जाये!
नहीं! इन दोनों को अकेला हो जाने दो!
रात को महावत को दूर ले जाना और हाथी को ले आना!
और फिर चांदनी रात को कुछ साये हाथी और महावत की ओर बढ़े।
याद रखना... पहले महावत को शांत करना है... जिससे वह अपने हाथी को हुक्म न दे सके!
आऽऽ घघ
अब इसे यहां से दूर ले चलो जिससे इसकी हाथी इसकी आवाज न सुन सके!
तब हाथी को पकड़ना आसान हो जायेगा!
अचानक ही हाथी की आंख खुल गयी। खतरे को भांप कर वह चिंघाड़ उठा।
चिंघाऽऽई ई ई ई ईऽ
हाथी! ये तो पागल हो गया!
गोली मार दो इसे!
नही... रुको!

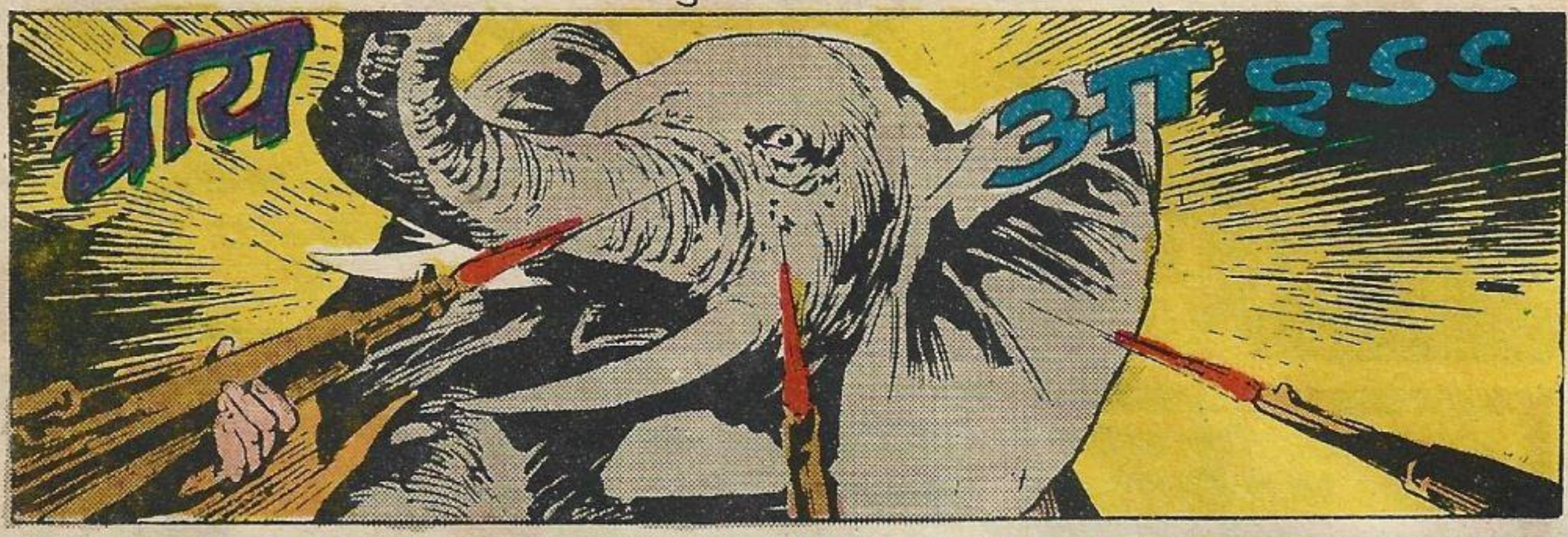

धांय
आ ईऽऽ
य..ये.. तो मर गया!
अच्छा हुआ ये मर गया वरना मैं मर जाता।
राजा चला गया...श्यामसिंह ने घृणा से नजरें उठा कर उसे देखा।
मैं उसे अपने हाथों से मार कर अपने दोस्त का...
...बदला लूंगा...लेकिन कैसे? क्या मैं उस तक पहुंच पाऊंगा?!
ओह! एक अनोखी अनुभूति हो रही है मेरे दिमाग में जैसे कुछ घूम रहा हो!
हां... हां... तुम्हारे विचार मुझ तक पहुंच रहे हैं रामू..
ओह! जरूर बदला लिया जायेगा राजा से!
और फिर कई हफ्तों बाद जब राजा दुर्जनसिंह अपने महल के आंगन में टहल रहा था तब...
इस कोहरे में कौन सोया हुआ है?
कमाल है... ऐसा लग रहा है जैसे कोई मेरा पीछा कर रहा है।

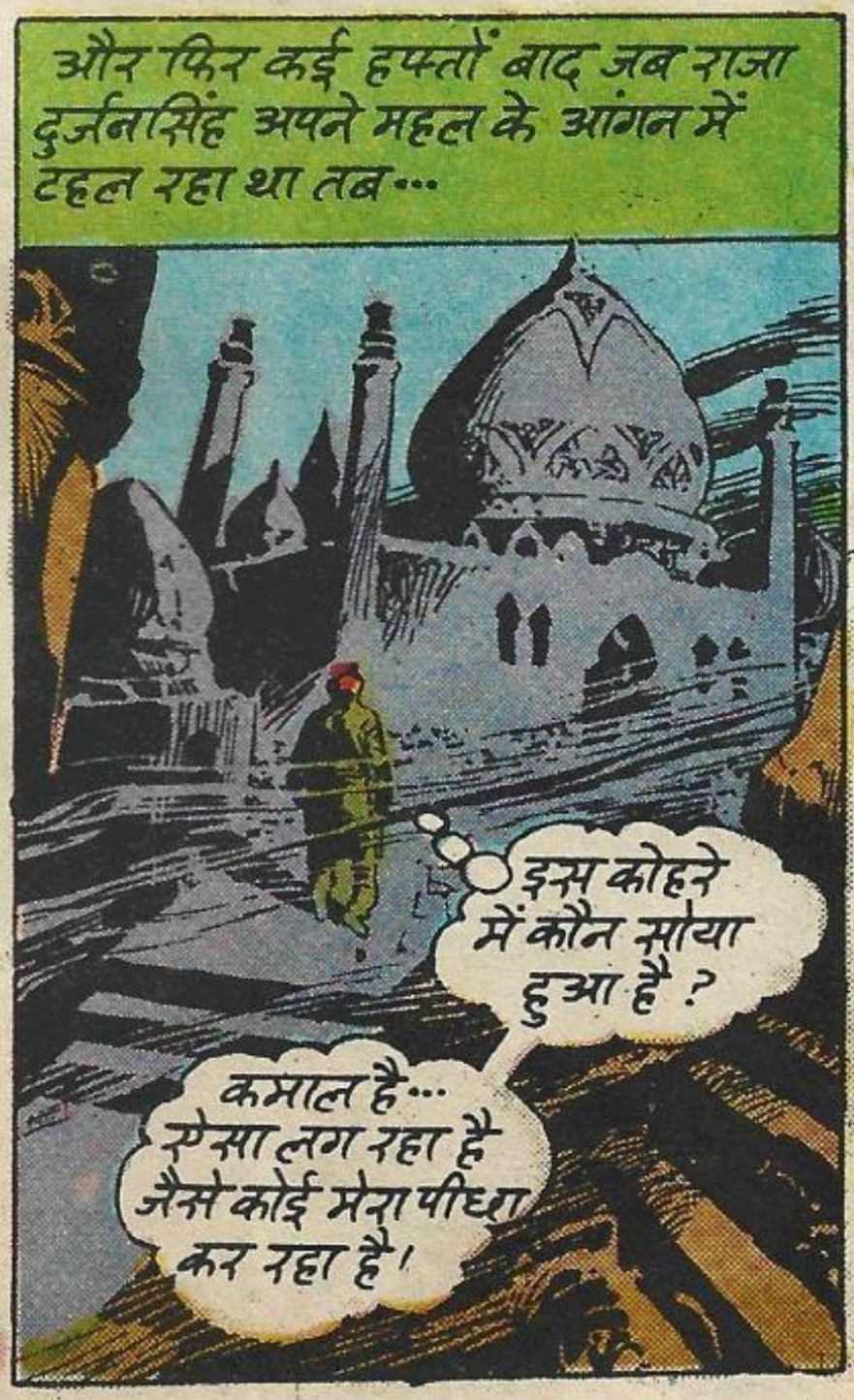

निधाड़

ओह नहीं... हे मां काली मेरी रक्षा करना!

और फिर उस कोहरे में से जो आकृति निकली उसे देखकर राजा की रूह तक कांप उठी।

मेरा गला... नहीं... मेरी आवाज नहीं निकल रही है... क्या... करूं... बचाओ!

आह हह!

राजा जी! लगता है राजा जी को कुछ हो गया!

इस चीख ने तो मेरा खून ही जमा डाला।

और फिर जब कोहरा छंटा-

कोई हाथी ही इस तरह से किसी को कुचल सकता है!

असम्भव! हमने तो किसी हाथी को नहीं देखा? हाथी यहां आ ही नहीं सकता!

Scan & editing by Rahul Dubey

तब यह पैरों के निशान किसके है ?
ऐं..जल्दी से बन्दूकें लाओ !
अगर कोई जानवर हो तो उसे देखते ही गोली मार देना !
जैसे-जैसे वे बढ़ते चले गए उनके आश्चर्य की सीमा न रही। हाथी के पैरों के निशानों का आकार बदलने लगा।
देखो ! पैरों का आकार बदलता जा रहा है !
छोटे होते जा रहे हैं !
और इंसानी पैरों में बदल गए।
और फिर आगे, वह निशान खत्म ही हो गए। क्योंकि वह पैर पानी में पड़ चुके थे।
हमारा काम पूरा हो गया...रामू सुना तुमने ?
और इसके बाद यह कहानी लोक कथा बन गयी। किस तरह रामू हाथी की आत्मा ने अपने महावत श्यामसिंह के शरीर में घुस कर अपने कातिल से बदला लिया। वाकई महावत और उसके हाथी में अनोखा रिश्ता होता है।
समाप्त

करण चौधरी के लिए ये एक युद्ध था। कीड़ों के साथ युद्ध ! उसे हमेशा ऐसा महसूस होता जैसे उसके शरीर पर कीड़े रेंग रहे हों! ऐसा लगता जैसे कई पैरों वाला कोई नन्हा जीव शरीर पर रेंग रहा है।

कीड़ों का दुश्मन

सम्पादन: दीपक जैन • कला: वैशाली आर्ट.

दादी मां! दादी मां!! कोई कीड़ा मेरी कमीज में घुस गया है! कहीं मुझे काट न ले!

बेवकूफ! मत बनो! करण- जरूर कोई धागा ढीला हो गया होगा!

इधर है.. नहीं sss इधर है!

अच्छे बच्चे बनो करण! ये तुम्हारे दिल का वहम है। कोई कीड़ा वगैरह नहीं है! अपना खाना खाओ और बिस्तर में घुस जाओ-- शाबाश!

नहीं sss दादी मां! सुनो तो!

वह सारी रात जागता रहा, उस नयी कमीज को पहने हुए। न तो वह हिल रहा था, न सांस ले पा रहा था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे कोई नन्हा कीड़ा उसके पेट पर रेंग रहा है।

...उसे ऐसा लग रहा था जैसे कोई चीज इंतजार कर रही है कि वह हिले और वह चीज उसे काट ले।

उसकी दादी ने सुबह देखा कि करण आंगन में पड़े सोया पड़ा है। उसका नन्हा शरीर अकड़ा पड़ा था। बड़ी विकट परिस्थिति थी।

करण! ओह! हे भगवान!

जब करण पांच साल का हुआ तो उसके पापा ने उसे उसके जन्म दिन पर एक कुत्ता उपहार दिया।

वाह! कितना प्यारा है! मैं इसका नाम रॉकी रखूंगा!

दोनों खूब खेलते-

रॉकी और मैं मछली पकड़ने जा रहे हैं मां!

ठीक है! लेकिन खाने के वक्त पर वापिस आ जाना!

लेकिन एक दोपहर जब करण ने रॉकी को पुकारा तो वह वापिस नहीं आया।

र...रॉकी sss रॉकी कहां हो तुम?

शायद वह भाग गया है! कोई बात नहीं, अपने आप वापिस आ जाएगा!

वह भागा नहीं है मां! उसके साथ जरूर कोई घटना पेश आई है!

करण ने कुत्ते को कई जगह तलाशा...

रॉकी? क्या तुम अन्दर हो?

...जल्दी ही वह उसे मिला-

रॉकी!

लेकिन... मरा हुआ...
...ओह! रॉकी!
लेकिन रॉकी को गौर से देखने पर करण की चीख निकल गयी। उसकी खूबसूरत आंख की जगह छेद हो चुका था। और सैकड़ों की तादाद में कीड़े उसमें से निकल रहे थे।
ई ईऽऽ ऊ, ऊ,ऽऽ
तुम्हें यह समझना चाहिए बेटे कि रॉकी तुम्हारी लापरवाही से मरा है, तुम उसे ट्रीटमेंट के लिए डाक्टर के पास नहीं ले गए।
नहीं मां नहीं... ये सब उन कीड़ों की वजह से हुआ है!
कोई भी बात उसकी समझ में नहीं आयी-बस वह यही दोहराता रहा।
कीड़े! ये सब कीड़ों की वजह से हुआ है।
अब वह कभी किसी कीड़े के नजदीक नहीं जाता था, यहां तक कि घर के पिछवाड़े उड़ने वाली तितलियों में भी उसकी दिलचस्पी खत्म हो गयी।
बेटे! क्यों नहीं बाहर जाकर दूसरे बच्चों के साथ खेलते!
ना! मां मैं यहीं ठीक हूं!
एक दिन पड़ोस की एक लड़की अप्पू करण से मिलने आयी।
तुमने क्या ले रखा है?
ही.. ही.. तुम्हारे लिए उपहार है!
क्या है?
यह!
पूरा जार जुगनुओं से भरा हुआ था। सभी तेज रोशनी छोड़ रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे जार न हो बल्कि तेज रोशनी का बल्ब हो!
कीड़े! मुझे कीड़ों से नफरत है, समझी!

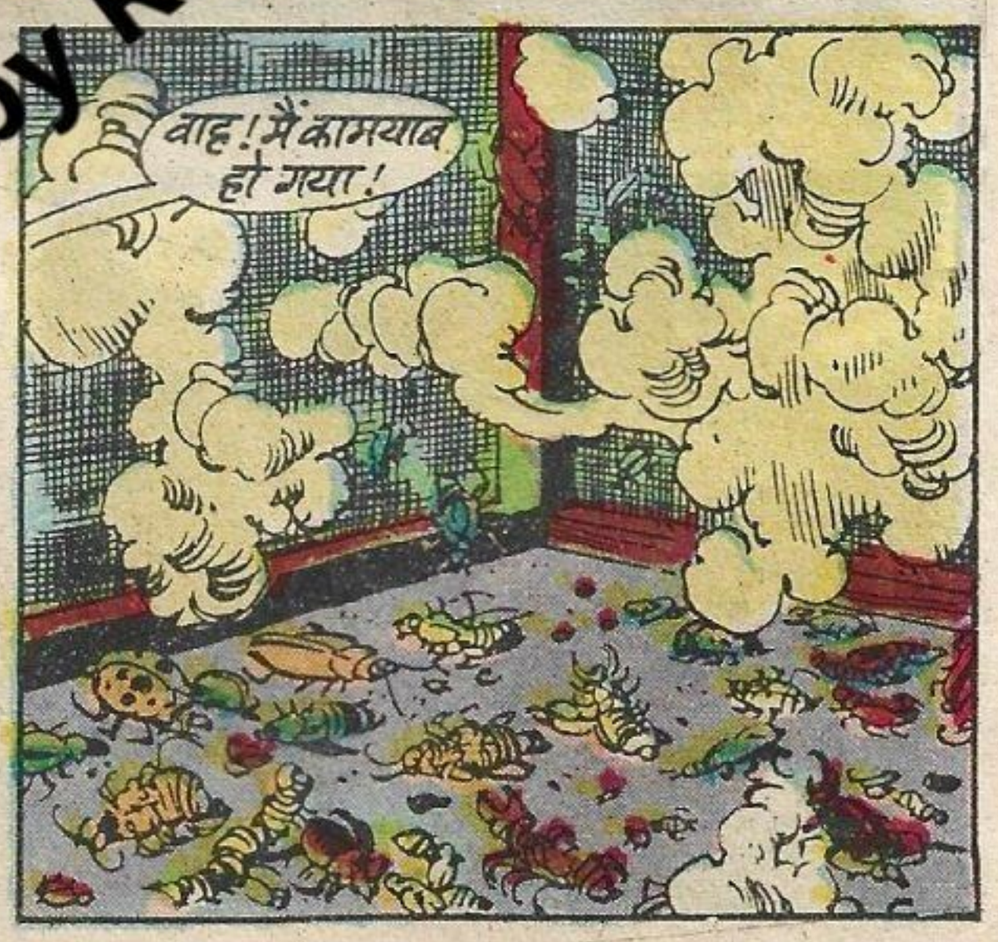

Scan & editing by Rahul Dubey

अब तो करण चौधरी ने बहुत बड़ी कम्पनी स्थापित कर ली। वह ऐसी दवायें बनाने लगा जो कीड़ों को मारती थी। जल्दी ही वह करोड़पति बन गया।

इस डिब्बे में ऐसी दवा है जो इस पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक कीड़े को मार डालेगी।

आडोकास...
कीड़े मारने की लाजवाब दवा

पचास की उम्र में उस का लंबा चौड़ा साम्राज्य था। लेकिन उसका कोई साथी नहीं था।

हाय!

जल्दी ही वह स्वीटी से मिला-

कहो! मदद चाहिये क्या?

करण के लिए यह पहली नजर का प्यार था-

प्रिय! मैं तुम्हारी ज्यादा सहायता नहीं कर सकती! लेकिन तुम्हारे साथ बैठ कर तुम्हारी कम्पनी कर सकती हूं!

मैं नयी दिल्ली तक तुम्हें वापिस ले जा सकती हूं! जिसमें मैं तुम्हारे साथ बहुत ज्यादा समय बिता सकूंगी।

ओह स्वीटी तुम बड़ी अच्छी हो

जल्दी ही स्वीटी के साथ करण को बहुत ज्यादा प्यार हो गया और उसने शहर जाकर उसके साथ शादी कर ली।...

अब तुम दोनों पति-पत्नी हो!

"जिस लड़की को अभी वह ठीक से जानता भी नही था।

तुम मेरे घर से खूब प्यार करोगे... प्रिय! मैं आज तक कहीं और नहीं रही।

अगली सुबह...

...य...ये मैं कहां आ गया? आह!

क्या हुआ प्रिय... ओह चिन्ता मत करो! मैंने उनमें से किसी को नहीं मारा ये सब मरी हुई ही मिली थी मुझे, मैंने आज तक कभी किसी कीड़े को नहीं मारा!

...क्योंकि मैं जीव विज्ञान की छात्रा हूं! और कीड़ों से प्यार करती हूं!

अब वह उसके घर से भाग जाना चाहता था। उसका घर चिड़ियाघर था। मर्तबानों में कीड़े बंद थे। दीवारों पर कीड़े मकोड़े टंगे थे।
ओह नहीं! प्रिय! मैं इन्हें मरता हुआ नहीं देख सकती।
वह उसे तलाक भी नहीं दे सकता था। क्योंकि उसे कानूनी सहायता मिल जाती और उसका सारा व्यापार समाप्त हो जाता। अब कोई चारा नहीं था।
आऽऽऽह! मैं और ज्यादा नहीं सह सकता!
अकेला अपनी परछत्ती की वर्कशाप में—
वह अपनी कार बड़ी तेज चलाती है। यह साइनबोर्ड छुटकारा दिलायेगा!
रास्ता इधर है
मैं अपने दोस्त श्याम के घर जा रहा हूं! भूलना मत ''' रात को आठ बजे तक आ जाऊंगा!
ठीक है! मुझे भी अपनी सहेली के घर जाना है।
ये बिल्कुल सही जगह है! अंधेरा भी होने वाला है। उसे पता ही नहीं चलेगा कि यह रास्ता मौत के मुंह में जाता है!
उसकी कार की आवाज आ रही है, बस अब इंतजार खत्म हुआ!
क'''क्या? ये तो उसकी कार है। लगता है कुछ गड़बड़ हो गयी।

अरे... ये बोर्ड तो गिरा पड़ा है.. लेकिन कैसे?
क्या?

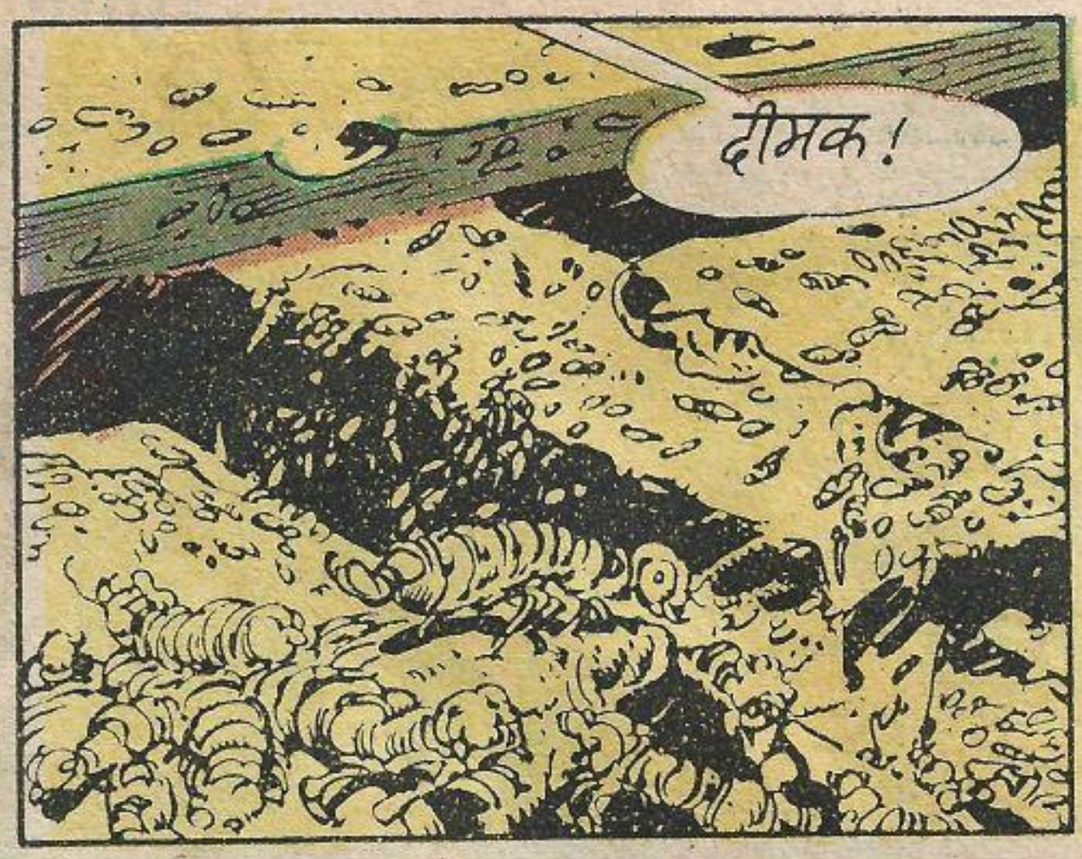
दीमक!

मच्छर! नहीं... दूर हटो! छोड़ो मुझे!

...यहां से भाग जाना चाहिए। वे मेरे पीछे पड़े हैं, खून पीने वाले कीड़े!

ओह! एक और बोर्ड... शायद रास्ता इधर है।

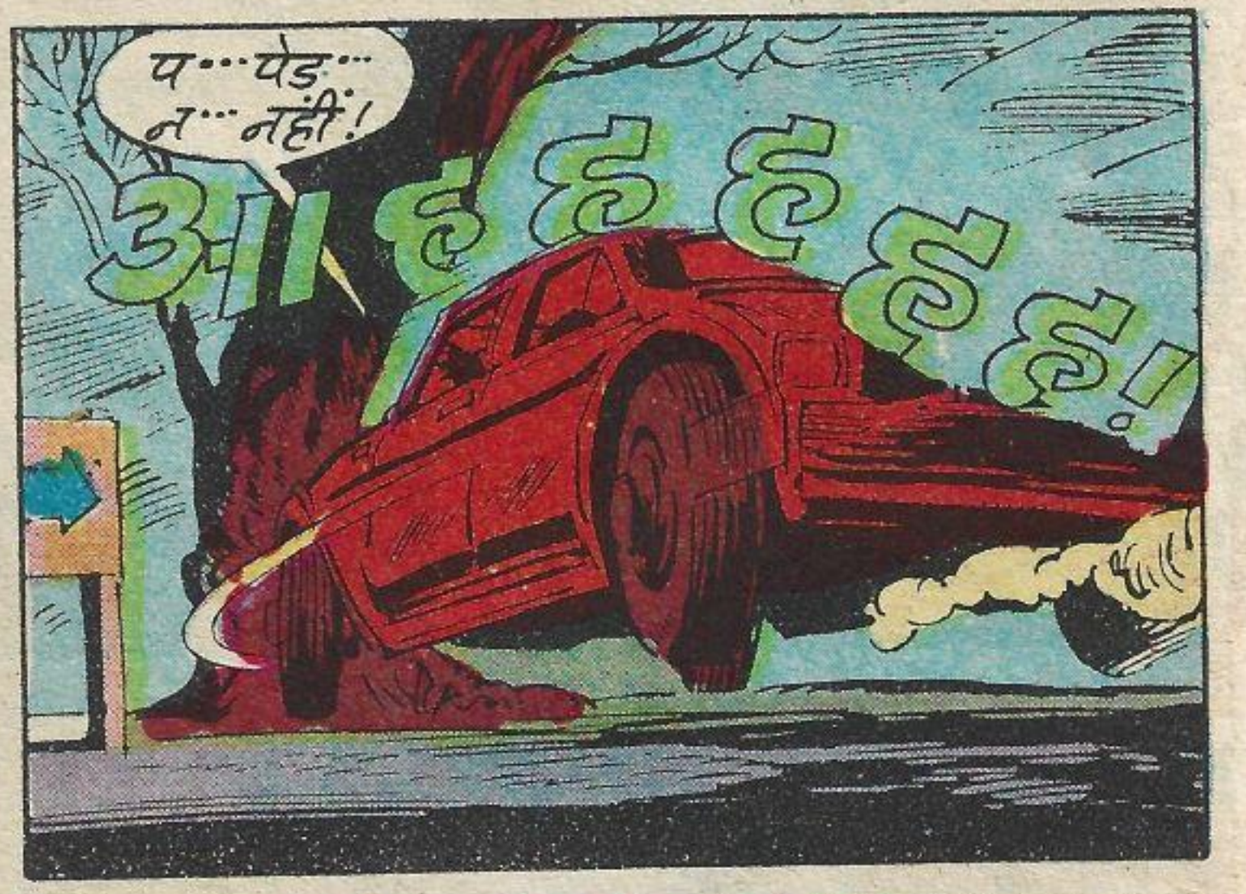
प... पेड़... न... नहीं!
आह ह ह ह!

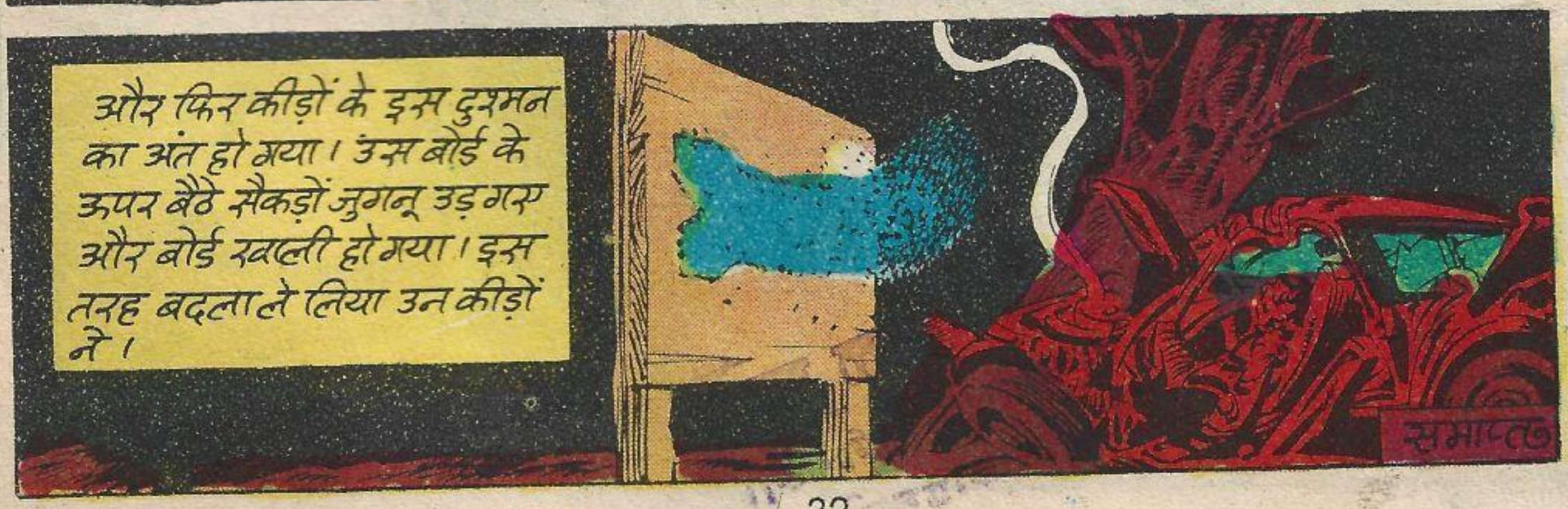
और फिर कीड़ों के इस दुश्मन का अंत हो गया। उस बोर्ड के ऊपर बैठे सैकड़ों जुगनू उड़ गए और बोर्ड खाली हो गया। इस तरह बदला ले लिया उन कीड़ों ने।
समाप्त

दुर्गा कॉमिक्स

के हॉरर विशेषांक में
हाहाकार मचाने जल्द आ रही है।

घुआंधार
पाब्लीसिटी
एवं स्टीकर के साथ
एक ताज़ा विशेषांक
जल्द आ रहा है।

कृपया इस
हॉरर विशेषांक को
रात्रि में अकेले
न पढ़े

A.H.W.SACHIN SERIES

ख़बरदार ! होशियार !! सावधान !!! आपके शहर में शीघ्र

चुड़ैल

दुर्गा कॉमिक्स
दुर्गा कॉमिक्स
के आगामी सैट में आपके शहर में शीघ्र आ रहा है
टोरा-टोरा सीरीज़ का नया विशेषांक जंजाजू
हा...हा...हा...SS जंजाजू खुद प्रल्य है।
तेरी मौत तुझे पृथवी लोक पर खींच लायी है जंजाजू
इस सुपर विशेषांक के साथ टोरा-टोरा का सुपरसोनिक स्टीकर
मुफ्त
जंजाजू
कृपया उपरोक्त कॉमिक्स अपने निकट के न्यूज़पेपर एजेन्ट या बुकसेलर के यहां आज ही सुरक्षित करालें।
A.H.W.SACHIN SERIES
Scan & editing by Rahul Dubey